Feed The Future India Triangular Training (FTF ITT) Program
International Training Program on "Management of Dairy Cooperatives"
During 10th to 24th April, 2018 at ICAR-National Dairy Research Institute (NDRI), Karnal, Haryana, India

Media coverage of Inaugural Function held on 12th April, 2018

Dainik Jagaran

ग्रामीण क्षेत्र में डेयरी आजीविका का मुख्य स्त्रोत

जागरण संवाददाता, करनाल : राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान में फीड द फ्यूचर- इंडिया ट्राइंग्यूलर ट्रेनिंग प्रोग्राम के तहत डेयरी को-ऑपरेटिव प्रबंधन विषय पर 15 दिवसीय अंतरराष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम की शुरुआत की गई। इसमें मलोवी उच्च आयोग के उच्चायुक्त जॉर्ज क्राइटन मंकोंडिवा ने बतौर मुख्यातिथि शिरकत की।

निदेशक डॉ. आरआरबी सिंह ने उनका स्वागत किया। शिविर में मलोवी, मोजाम्बिक, म्यांमार, केन्या, लाइबेरिया व युगांडा सहित 6 देशों के 22 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य अफ्रीकी और एशियाई देशों के लोगों को डेयरी को-ऑपरेटिव का प्रबंधन, संचालने एवं मार्केटिंग की ट्रेनिंग देना है।

मुख्यातिथि जॉर्ज क्राइटन मंकोंडिवा ने कहा कि भारत बहुत ही सुंदर और तेजी से विकास की ओर अग्रसर देश है। भारतीय वैज्ञानिकों द्वारा किए गए शोध एशियाई एवं अफ्रीकी देशों के लिए अनुकरणीय है।

डॉ. आरआरबी सिंह ने अंतरराष्ट्रीय प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में डेयरी आजीविका का प्रमुख स्त्रोत है। जानवरों की अच्छी नस्ल, प्रबंधकीय कौशल और मार्केटिंग के आधार पर डेयरी के माध्यम से अधिक मुनाफा लिया जा सकता है, लेकिन इसमें अधिक आबादी के साथ कम उत्पादकता, चारे की कमी, डेरी जानवरों में देरी से यौवन परिपक्वता जैसी कई समस्याएं भी हैं, जिनका समाधान करना बहुत जरूरी है।

उन्होंने बताया कि अफ्रीकी देशों में जमीन बहुत है, लेकिन प्रौद्योगिकियों का अभाव है। इसलिए इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से हमारे वैज्ञानिकों द्वारा डेयरी के क्षेत्र में प्राप्त ज्ञान को प्रतिभागियों के साथ साझा किया जाएगा, ताकि एशियाई एवं अफ्रीकी देशों में फूड सिक्योरिटी को बढ़ाया जा सके।

एनडीआरआइ में आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान संबोधित करते जार्ज क्राइटन • जागरण

करनाल की एनडीआरआइ में आयोजित प्रशिक्षण शिविर में उपस्थित विभिन्न देशों के प्रतिभागी • जागरण

06 देशों के 22 प्रतिभागियों ने लिया भाग

15 दिवसीय अंतराष्ट्रीय कार्यक्रम की शुरूआत

प्रशिक्षण

- भारत तेजी से विकास की तरफ हो रहा अग्रसर : जार्ज क्राइटन
- डॉ. आरआरबी सिंह ने प्रतिभागियों का किया स्वागत

पिछड़े देशों के करीब 1400 लोगों को किया जाएगा प्रशिक्षित

राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबंधन हैदराबाद के संयुक्त निदेशक डॉ. एमए करीम ने बताया कि फीड द फ्यूचर योजना के तहत भारत में वर्ष 2020 तक 44 ट्रेनिंग प्रोग्राम के माध्यम से पिछड़े देशों के करीब 1400 लोगों को प्रशिक्षित करने का लक्ष्य है। इस कड़ी में यह 23वीं ट्रेनिंग है। सभी में डेयरी पर ही फोकस किया जाता है। कोर्स कोर्डिनेटर डॉ. गोपाल सांखला ने बताया कि यह प्रशिक्षण कार्यक्रम राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबंधन हैदराबाद के सहयोग एवं अमेरिका की संस्था यूएसएड द्वारा प्रायोजित है। इसमें 6 देशों के कृषि क्षेत्र के 5, पशुपालन के क्षेत्र से 16 तथा एनजीओ से एक प्रतिभागी सहित 22 लोग शामिल हुए हैं। जिनमें छह महिलाएं भी शामिल हैं। इस अवसर पर डॉ. बीएस मीणा, डॉ. केएस कादियान, बीएस मीणा, डॉ. सुजीत झा व डॉ. एवआर मीणा उपस्थित रहे।

Dainik Bhaskar

अच्छी नस्ल, प्रबंधकीय कौशल के आधार पर डेरी के माध्यम से मुनाफा अर्जित किया जा सकता है : डॉ. आरआरबी सिंह

भास्कर न्यूज | करनाल

राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान में फीड द फ्यूचर-इंडिया ट्राइंग्यूलर ट्रेनिंग प्रोग्राम के तहत डेरी कोऑपरेटिव प्रबंधन विषय पर 15 दिवसीय अंतरराष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। मुख्य अतिथि जॉर्ज क्राइटन मंकोंडिवा, उच्चायुक्त, मलावी उच्च आयोग, नई दिल्ली व एनडीआरआई के निदेशक डॉ. आरआरबी सिंह ने दीप प्रज्वलित कर प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किया। इसमें मलोवी, मोजाम्बिक, म्यांमार, केन्या, लाइबेरिया तथा युगांडा सहित 6 देशों के 22 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य अफ्रीकी और एशियाई देशों के लोगों को डेरी कोऑपरेटिव का प्रबंधन, संचालन एवं मार्केटिंग की ट्रेनिंग देना है। मुख्य अतिथि जॉर्ज क्राइटन मंकोंडिवा ने कहा कि हिंदुस्तान बहुत ही सुंदर और तेजी से विकास की ओर अग्रसर देश है। जनसंख्या के लिहाज से इसे महादीप भी कहा जा सकता है। भारतीय वैज्ञानिकों द्वारा किए गए अनुसंधान एशियाई एवं अफ्रीकी देशों के लिए अनुकरणीय है। इसलिए सभी प्रतिभागियों को इसका लाभ उठाना चाहिए। एनडीआरआई के निदेशक डॉ. आरआरबी सिंह ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में डेरी आजीविका का प्रमुख स्रोत है। जानवरों की अच्छी नस्ल, प्रबंधकीय कौशल और मार्केटिंग के आधार पर डेरी के माध्यम से अधिक मुनाफा अर्जित किया जा सकता है, लेकिन अधिक आबादी के साथ कम उत्पादकता, चारे की कमी, डेरी जानवरों में देरी से यौवन परिपक्वता जैसी कई समस्याएं भी हैं, जिनका समाधान करना बहुत जरूरी है। अफ्रीकी देशों में जमीन बहुत है, लेकिन प्रौद्योगिकीय का अभाव है। इसलिए इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से हमारे वैज्ञानिकों द्वारा डेरी के क्षेत्र में अर्जित ज्ञान को प्रतिभागियों के साथ सांझा किया जाएगा, ताकि एशियाई एवं अफ्रीकी देशों में फूड सिक्योरिटी को बढ़ाया जा सके। उन्होंने आशा व्यक्त की कि कार्यक्रम सभी प्रतिभागियों और उनके देशों के लिए शिक्षित, उपयोगी और प्रासंगिक साबित होगा।

राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबंधन हैदराबाद (मैनेज) हैदराबाद के संयुक्त निदेशक डा. एमए करीम ने बताया कि फीड द फ्यूचर योजना के तहत भारत में वर्ष 2020 तक 44 ट्रेनिंग प्रोग्राम के माध्यम से पिछड़े देशों के करीब 1400 लोगों को प्रशिक्षित करने का लक्ष्य है।

करनाल. राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान में फीड द फ्यूचर-इंडिया ट्राइंग्यूलर ट्रेनिंग कार्यक्रम में उपस्थित वैज्ञानिक। फोटो | भास्कर

Dainik Sawear

आयोजन डेरी को-ऑपरेटिव प्रबांधन विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू

डेरी क्षेत्र की आधुनिक तकनीकों की दी जानकारी

एशियाई एवं अफ्रीकन देशों के 23 प्रतिभाबियो ने लिया भाग

करनाल, 11 अप्रैल (सन्नी चौहान): राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान में फीड द फ्यूचर-इंडिया ट्राईग्यूलर ट्रेनिंग प्रोग्राम के तहत डेरी को-ऑपरेटिव प्रबंधन विषय पर 15 दिवसीय अंतरराष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किया गया। मुख्य अतिथि मलावी उच्च आयोग नई दिल्ली के उच्च आयुक्त महामहिम जॉर्ज क्राइटन मंकोंडिवा व एनडीआरआई के निदेशक डा. आरआरबी सिंह ने दीप प्रज्ज्वलित कर प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्‌घाटन किया। इसमें मलोवी, मोजाम्बिक, म्यांमार, केन्या, लाइबेरिया, तथा युगांडा सहित 6 देशों के 23 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य अफ्रीकी और एशियाई देशों के लोगों को डेरी को-ऑपरेटिव का प्रबंधन, संचालन एवं मार्केटिंग की ट्रेनिंग देना है।

एन.डी.आर.आई. में दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ करते मलावी उच्च आयोग नई दिल्ली के उच्च आयुक्त महामहिम जॉर्ज क्राइटन मंकोंडिवा। कार्यक्रम में उपस्थित विभिन्न देशों से आए प्रतिभागी।

मुख्य अतिथि महामहिम जॉर्ज क्राइटन मंकोंडिवा ने कहा कि हिन्दुस्तान बहुत ही सुंदर और तेजी से विकास की ओर अग्रसर देश है। जनसंख्या के लिहाज से इसे महादीप भी कहा जा सकता है। भारतीय वैज्ञानिकों द्वारा किए गए अनुसंधान एशियाई एवं अफ्रीकी देशों के लिए अनुकरणीय है। इसलिए सभी प्रतिभागियों को इसका लाभ उठाना चाहिए।

एनडीआरआई के निदेशक डा. आरआरबी सिंह ने अंतर्राष्ट्रीय प्रतिभागियों का स्वागत किया और कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में डेरी आजीविका का प्रमुख स्त्रोत है। जानवरों की अच्छी नस्ल, प्रबंधकीय कौशल और मार्केटिंग के आधार पर डेरी के माध्यम से अधिक मुनाफा अर्जित किया जा सकता है, लेकिन अधिक आबादी के साथ कम उत्पादकता, चारे की कमी, डेरी जानवरों में देरी से यौवन परिपक्वता जैसी कई समस्याएं भी हैं, जिनका समाधान करना बहुत जरूरी है। उन्होंने बताया कि अफ्रीकी देशों में जमीन बहुत है, लेकिन प्रौद्योगिकियों का अभाव है। इसलिए इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से हमारे वैज्ञानिकों द्वारा डेरी के क्षेत्र में अर्जित ज्ञान को प्रतिभागियों के साथ सांझा किया जाएगा, ताकि एशियाई एवं अफ्रीकी देशों में फूड सिक्योरिटी को बढ़ाया जा सके। उन्होंने आशा व्यक्त की कि कार्यक्रम सभी प्रतिभागियों और उनके देशों के लिए शिक्षित, उपयोगी और प्रासंगिक साबित होगा।

राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबंधन हैदराबाद (मैनेज) हैदराबाद के संयुक्त निदेशक डा. एम.ए. करीम ने बताया कि फीड द फ्यूचर योजना के तहत भारत में वर्ष 2020 तक 44 ट्रेनिंग प्रोग्राम के माध्यम से पिछड़े देशों के करीब 1400 लोगों को प्रशिक्षित करने का लक्ष्य है। इस कड़ी में यह 23वां ट्रेनिंग है और सभी में डेरी पर ही फोकस किया जाता है। कोर्स कॉआर्डिनेटर डा. गोपाल सांखला ने बताया कि यह प्रशिक्षण कार्यक्रम राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबंधन हैदराबाद (मैनेज) के सहयोग एवं अमेरिका की संस्था यूएसएड द्वारा प्रायोजित है। इस 15 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में 6 देशों के कृषि क्षेत्र के 5, पशुपालन के क्षेत्र से 16 तथा एनजीओ से एक प्रतिभागी सहित 23 लोग शामिल हुए हैं। इसमें छह महिलाएं भी शामिल हैं।

डेरी विस्तार प्रभाग के अध्यक्ष डा. केहर सिंह कादियान ने सभी प्रतिभागियों को स्वागत किया और बताया कि आगामी 15 दिन तक सभी प्रतिभागियों के दिन की शुरूआत योग अभ्यास से शुरू होगी और उसके बाद प्रशिक्षण दिया जाएगा। डा. बीएस मीणा ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर डा. केएस कादियान, बीएस मीणा, डा. सुजीत झा, डा. एचआर मीणा सहित अन्य वैज्ञानिकगण उपस्थित रहे।

Delhi Punjab Kesari

एनडीआरआई में डेरी को-ऑपरेटिव प्रबंधन विषय पर 15 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू

एशियाई एवं अफ्रीकन देशों के 23 प्रतिभागियों ने लिया भाग

डेरी क्षेत्र की आधुनिक तकनीकों के बारे में दी जाएगी जानकारी

करनाल, आशुतोष गौतम, चावला, (पंजाब केसरी): राष्ट्रीय डेरी अनुंसधान संस्थान में फीड द फ्यूचर - इंडिया ट्राईग्यूलर ट्रेनिंग प्रोग्राम के तहत डेरी को-ऑपरेटिव प्रबंधन विषय पर 15 दिवसीय अंतरराष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्य्रक्रम का शुभारंभ हुआ। मुख्यअतिथि जॉर्ज क्राइटन मंकोंडिवा, उच्चायुक्त, मलावी उच्च आयोग, नई दिल्ली व एनडीआरआई के निदेशक डा. आरआरबी सिंह ने दीप प्रज्ज्वलित कर प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किया। इसमें मलोवी, मोजाम्बिक, म्यांमार, केन्या, लाइबेरिया, तथा युगांडा सहित 6 देशों के 23 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य अफ्रीकी और एशियाई देशों के लोगों को डेरी को-ऑपरेटिव का प्रबंधन, संचालन एवं मार्केङ्क्षटग की ट्रेनिंग देना है। मुख्य अतिथि महामहिम जॉर्ज क्राइटन मंकोंडिवा ने कहा कि हिन्दुस्तान बहुत ही सुंदर और तेजी से विकास की ओर अग्रसर देश है। जनसंख्या के लिहाज से इसे महादीप भी कहा जा सकता है। भारतह्वीय वैज्ञानिकों द्वारा किए गए अनुसंधान एशियाई एवं अफ्रीकी देशों के लिए अनुकरणीय है। इसलिए सभी प्रतिभागियों को इसका लाभ उठाना चाहिए। एनडीआरआई के निदेशक डा. आरआरबी सिंह ने अंतरराष्ट्रीय प्रतिभागियों का स्वागत किया और कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में डेरी आजीविका का प्रमुख स्त्रोत है। जानवरों की अच्छी नस्ल, प्रबंधकीय कौशल और मार्केटिंग के आधार पर डेरी के माध्यम से अधिक मुनाफा अर्जित किया जा सकता है, लेकिन अधिक आबादी के साथ कम उत्पादकता, चारे की कमी, डेरी जानवरों में देरी से यौवन परिवक्कता जैसी कई समस्याएं भी हैं, जिनका समाधान करना बहुत जरूरी है।

एनडीआरआई में प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए मुख्यअतिथि। (छाया:भिंडर)

उन्होंने बताया किअफ्रीकी देशों में जमीन बहुत है, लेकिन प्रौद्योगिकियों का अभाव है। इसलिए इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से हमारे वैज्ञानिकों द्वारा डेरी के क्षेत्र में अर्जित ज्ञान को प्रतिभागियों के साथ सांझा किया जाएगा, ताकि एशियाई एवं अफ्रीकी देशों में फूड सिक्योरिटी को बढ़ाया जा सके। उन्होंने आशा व्यक्त की कि कार्यक्रम सभी प्रतिभागियों और उनके देशों के लिए शिक्षित, उपयोगी और प्रासंगिक साबित होगा। राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबंधन हैदराबाद (मैनेज) हैदराबाद के संयुक्त निदेशक डा. एम.ए. करीम ने बताया कि फीड द फ्यूचर योजना के तहत भारत में वर्ष 2020 तक 44 ट्रेनिंग प्रोग्राम के माध्यम से पिछड़े देशों के करीब 1400 लोगों को प्रशिक्षित करने का लक्ष्य है। इस कड़ी में यह 23वां ट्रेनिंग है और सभी में डेरी पर ही फोकस किया जाता है। कोर्स कॉआर्डिनेटर डा. गोपाल सांखला ने बताया कि यह प्रशिक्षण कार्यक्रम राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबंधन हैदराबाद (मैनेज) के सहयोग एवं अमेरिका की संस्था यूएसएड द्वारा प्रायोजित है। इस 15 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में 6 देशों के कृषि क्षेत्र के 5, पशुपालन के क्षेत्र से 16 तथा एनजीओ से एक प्रतिभागी सहित 23 लोग शामिल हुए हैं। इसमें छह महिलाएं भी शामिल हैं। डेरी विस्तार प्रभाग के अध्यक्ष डा. केहर सिंह कादियान ने सभी प्रतिभागियों को स्वागत किया और बताया कि आगामी 15 दिन तक सभी प्रतिभागियों के दिन की शुरूआत योग अभ्यास से शुरू होगी और उसके बाद प्रशिक्षण दिया जाएगा। डा. बीएस मीणा ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर डा. केएस कादियान, बीएस मीणा, डा. सुजीत झा, डा. एचआर मीणा सहित अन्य वैज्ञानिकगण उपस्थित रहे।

करनाल केसरी

डेयरी को-ऑप्रेटिव प्रबंधन विषय पर 15 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू

अफ्रीकी और एशियाई देशों के लोगों को डेयरी को-ऑप्रेटिव का प्रबंधन, संचालन एवं मार्कीटिंग की ट्रेनिंग देना उद्देश्य

दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ करते व डैलीगेट्स के साथ मुख्यातिथि। (पंकज)

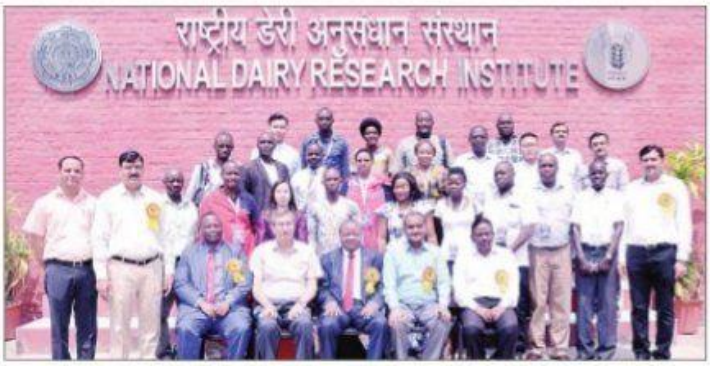

6 देशों के 23 प्रतिभागियों ने लिया भाग

करनाल, 11 अप्रैल (पांडेय): राष्ट्रीय डेयरी अनुंसधान संस्थान में फीड द फ्यूचर इंडिया ट्राइंग्यूलर ट्रेनिंग प्रोग्राम के तहत डेयरी को-ऑप्रेटिव प्रबंधन विषय पर 15 दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया जिसमें मुख्यातिथि महामहिम जॉर्ज क्राइटन मंकोंडिवा, उच्चायुक्त, मलावी उच्च आयोग, नई दिल्ली व एन.डी.आर.आई. के निदेशक डा. आर.आर.बी. सिंह ने दीप प्रज्वलित कर प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किया। इसमें मलावी, मोजाम्बिक, म्यांमार, केन्या, लाइबेरिया, तथा युगांडा सहित 6 देशों के 23 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य अफ्रीकी और एशियाई देशों के लोगों को डेयरी को-ऑप्रेटिव का प्रबंधन, संचालन एवं मार्कीटिंग की ट्रेनिंग देना है।

हिंदुस्तान सुंदर और तेजी से विकास की ओर अग्रसर

मुख्यातिथि महामहिम जॉर्ज क्राइटन मंकोंडिवा ने कहा कि हिन्दुस्तान बहुत ही सुंदर और तेजी से विकास की ओर अग्रसर देश है। जनसंख्या के लिहाज से इसे महादीप भी कहा जा सकता है। भारतीय वैज्ञानिकों द्वारा किए गए अनुसंधान एशियाई एवं अफ्रीकी देशों के लिए अनुकरणीय है। इसलिए सभी प्रतिभागियों को इसका लाभ उठाना चाहिए। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डॉ. आर.आर.बी. सिंह ने प्रतिभागियों का स्वागत किया।

ग्रामीण क्षेत्रों में आजीविका का मुख्य साधन डेयरी

उन्होंने बताया कि भारत देश के ग्रामीण क्षेत्रों में डेयरी आजीविका का प्रमुख स्त्रोत है। यहां के ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोग अच्छी नस्ल के पशुओं का पालन करते हैं और अच्छी आजीविका प्राप्त करते हैं। संस्थान की ओर से भी समय समय ग्रामीण क्षेत्र के पशुपालकों को जागरूक किया जाता है। अफ्रीकी देशों में जमीन बहुत है, लेकिन प्रौद्योगिकियों का अभाव है। इसलिए इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से हमारे वैज्ञानिकों द्वारा डेयरी के क्षेत्र में अर्जित ज्ञान को प्रतिभागियों के साथ सांझा किया जाएगा ताकि एशियाई एवं अफ्रीकी देशों में फूड सिक्योरिटी को बढ़ाया जा सके। इस अवसर पर डा. के.एस. कादियान, बी.एस. मीणा, डा. सुजीत झा, डा. एचआर मीणा सहित अन्य वैज्ञानिकगण उपस्थित रहे।

पंजाब केसरी ई-पेपर Thu, 12 April 2018
epaper.punjabkesari.in//c/27821645

Haribhoomi

अंतरराष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में बोले महामहिम जॉर्ज क्राइटन मंकोंडिवा

भारत सुंदर और तेजी से विकास की ओर अग्रसर देश

हरिभूमि न्यूज ▶▶| करनाल

राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान में फीड द फ्यूचर-इंडिया ट्राईंयूलर ट्रेनिंग प्रोग्राम के तहत डेरी को-ऑपरेटिव प्रबंधन विषय पर 15 दिवसीय अंतरराष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। मुख्य अतिथि महामहिम जॉर्ज क्राइटन मंकोंडिवा, उच्चायुक्त, मलावी उच्च आयोग, नई दिल्ली व एनडीआरआई के निदेशक डा. आरआरबी सिंह ने दीप प्रज्जवलित कर प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किया। इसमें मलोवी, मोजाम्बिक, म्यांमार, केन्या, लाइबेरिया, तथा युगांडा सहित 6 देशों के 22 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य अफ्रीकी और एशियाई देशों के लोगों को डेरी को-ऑपरेटिव का प्रबंधन, संचालन एवं मार्केटिंग की ट्रेनिंग देना है। मुख्य अतिथि महामहिम जॉर्ज क्राइटन मंकोंडिवा ने कहा कि हिन्दुस्तान बहुत ही सुंदर और तेजी से विकास की ओर अग्रसर देश है। जनसंख्या के लिहाज से इसे महादीप भी कहा जा सकता है। भारतीय वैज्ञानिकों द्वारा किए गए अनुसंधान एशियाई एवं अफ्रीकी देशों के लिए अनुकरणीय है। इसलिए सभी प्रतिभागियों को इसका लाभ उठाना चाहिए। राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबंधन हैदराबाद (मैनेज) हैदराबाद के संयुक्त निदेशक डा. एम.ए. करीम ने बताया कि फीड द फ्यूचर योजना के तहत भारत में वर्ष 2020 तक 44 ट्रेनिंग प्रोग्राम के माध्यम से पिछड़े देशों के करीब 1400 लोगों को प्रशिक्षित करने का लक्ष्य है। इस कड़ी में यह 23वां ट्रेनिंग है और सभी में डेरी पर ही फोकस किया जाता है। डा. गोपाल सांखला ने बताया कि यह प्रशिक्षण कार्यक्रम राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबंधन हैदराबाद (मैनेज) के सहयोग एवं अमेरिका की संस्था यूएसएड द्वारा प्रायोजित है।

करनाल। विभिन्न देशों से आए प्रतिभागी।

किया जा सके मुनाफा अर्जित

एनडीआरआई के निदेशक डा. आरआरबी सिंह ने अंतरराष्ट्रीय प्रतिभागियों का स्वागत किया और कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में डेरी आजीविका का प्रमुख स्त्रोत है। जानवरों की अच्छी नस्ल, प्रबंधकीय कौशल और मार्केटिंग के आधार पर डेरी के माध्यम से अधिक मुनाफा अर्जित किया जा सकता है, लेकिन अधिक आबादी के साथ कम उत्पादकता, चारे की कमी, डेरी जानवरों में देरी से यौवन परिवक्वता जैसी कई समस्याएं भी हैं, जिनका समाधान करना बहुत जरूरी है। उन्होंने बताया कि अफ्रीकी देशों में जमीन बहुत है, लेकिन प्रौद्योगिकियों का अभाव है। इसलिए इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से हमारे वैज्ञानिकों द्वारा डेरी के क्षेत्र में अर्जित ज्ञान को प्रतिभागियों के साथ साझा किया जाएगा, ताकि एशियाई एवं अफ्रीकी देशों में फूड सिक्योरिटी को बढ़ाया जा सके। उन्होंने आशा व्यक्त की कि कार्यक्रम सभी प्रतिभागियों और उनके देशों के लिए शिक्षित, उपयोगी और प्रासंगिक साबित होगा।

The Tribune

Dairy coop training starts

KARNAL, APRIL 11

George Crytone Mkondiwa, High Commissioner of Malawi to India, inaugurated the 15-day long International Training on Management of Dairy Cooperative at National Dairy Research Institute (NDRI) here on Wednesday. He said the research methodology developed by India should be adopted in African countries for the benefit of farmers. The high commissioner exhorted 22 participants from six African countries — Kenya, Liberia, Malawi, Myanmar, Mozambique and Uganda — to learn more on attaining self sufficiency in agricultural production.

Dr RRB Singh, Director, NDRI, spoke on various technologies developed at NDRI on animal rearing that could be beneficial for Asian and African countries.

Under the programme, participants will interact with scientists, progressive dairy farmers and know about farm mechanisation industries. They will also visit cattle yards, bio-technology labs and meet dairy entrepreneurs, said Dr KS Kadiyan, head, dairy extension division. — TNS

The Tribune (Haryana Edition) Thu, epape